REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 6 | MARCH - 2018

पर्यावरण संरक्षण

डॉ अशोक तुकाराम जाधव
हिन्दी विभाग , कै. बाबासाहेब देशमुख गोरठेकर महाविद्यालय,उमरी जि नांदेड.

प्रस्तावना :

हमारे सामने प्रमुख समस्याओं से पर्यावरण संरक्षण की एक सबसे बडी समस्या हैं। इस समस्या का निर्माण होना भी मानव समुह ही जिम्मेवार हैं । जो प्रकृति कि विरूद्ध अपना बरताव कर रहा हैं । आज राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस समस्या का बोल बाला हो रहा हैं, किंतु इस पर कोइ निश्चित हल बना नहीं पाये हैं। क्यो कि, हर देश में प्रकृति के विरूद्ध हि दिन ब दिन कदम बडा रहें है। जिसकी झलक हमें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर रियो डीजेनेरी जैसे सम्मेलनों में मिल चुकी हैं।

पर्यावरण शब्द का अर्थ :

पर्यावरण शब्द परि +आवरण के संयोग से बना हैं। परि इस शब्द का अर्थ चारों दिशाओं या चारों ओर तथा आवरण का अर्थ परिवेश हैं। अर्थात् चारों ओर का परिवेश होता हैं।

पर्यावरण की परीभाषाएँ :

1 किर्टींग : ''जीवों के परिस्थिती की कारको का योग पर्यावरण हैं ।''

2 हर्स केविटस :''पर्यावरण उन सब बहारी दशाओं और प्रभाओं का योग हैं जो प्राणी या अवयों के जीवन औंर विकास पर प्रभाव डालते हैं ।'

3 टेसले : प्रभावकारी दशाओं का वह संपूर्ण योग जिसमें जीव रहते हैं पर्यावरण कहलाता हैं

उपरोक्त परिभाषाओं से यह अर्थ स्पष्ट होता हैं कि,पर्यावरण उन समस्त राजनैतिक, अर्थिक, सामाजिक, भौतिक, स्थितियों पर प्रभाव या कारकों का योग हैं । मानव को शुद्ध पर्यावरण होना अत्यंत आवश्यक हैं यही मानव के हित में होता हैं।

पर्यावरण स्वस्थ रहने हेतु अनेक आचार्योंने अध्ययन कर अपने विचारों को रखा हैं। वैसे देखा जाए तो पर्यावरण का संरक्षण प्रश्न एक पेचिदा प्रश्न हैं, क्यो कि, यह एक व्यक्ति से न होकर सारे समाज से जुडा

हैं। आज हम वर्तमान में यह कह सकते हैं कि, विकास के वायदे के बिना पर्यावरण का संरक्षण नहीं किया जा सकता और इसके बिना हम स्थायी रूप से विकास भी नहीं कर सकते हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण :

1 सर्व प्रथम 1968 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक स्वीडीश प्रतिनिधि ने पर्यावरण पर एक सम्मेलन 03 दिसम्बर 1968 में आयोजित किया।

2 संयुक्त राष्ट्रसंघ का मानव पर्यावरण सम्मेलन स्वीडन में जून 1972 में आयोजित किया गया।

3 ओजन सतह के संरक्षण सम्बन्धी वियना संधी, 1985 । यह संधी 22 मार्च 1985 को एक पूर्ण सम्मेलन द्वारा स्वीकार की गयी हैं, जिसका आयोजन संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा किया गया था।

4 1992 में ब्राजिल में विश्व के 174 देशो का पृथ्वी सम्मेलन आयोजित किया गया था। 2002 में जोहान्सबर्ग में पृथ्वी सम्मेलन आयोजित कर विश्व के सभी देशों ने पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान देने के लिए अनेक उपाय सुझाए गये।

भारत में पर्यावरण संरक्षण नियम :

इंडियन पैनल कोड 1860 की धारा 268 ,290,291,426,430,431, तथा 432 में पर्यावरणीय तथ्यों का विवरण हैं। तथा धारा 277 जल प्रदूषण और 278 वायु प्रदूषण से संबंधित हैं । भारत दुनियय के उन गिने चूने देशों में सम्मिलित हैं जिसके संविधान में देश की संपूर्ण वन्य संपदा समाविष्ट हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए भारत में बहुत से प्रावधान बनाये गये हैं। महज कोई पर्यावरण को क्षति पहूंचाता हैं तो उसे दंडित किया जा सकता हैं। इस प्रकार भारत में पर्यावरण संरक्षण किया जाता हैं।

पर्यावरण संरक्षण में समाज की भूमिका :

हमारे संविधान में सभी जन समुह को अपने अपने जीवन शैली को सम्प्रदाय तथा संस्कृति के आनुसार यापन करने का अधिकार दिया हैं। इस में जन समुह को अधिक महत्व दिया हैं। जन तंत्र में जनसमुह को ही महत्व दिया जाता हौं। पर्यावरण संरक्षण के लिए लोगों को कायदे से ज्यादा खुद की जवाबदारी से करना चाहिए। इस से बहुत सी समस्या कम हो सकती हैं।

जैसे :

1 बाजार जाते समय घर से थैली लेकर चले जाते हैं तो कॅरीबॅगों की आवश्यकता नहीं पडेगी और पर्यावरण का संरक्षण होगा ।

2 घर के आगंण में, खेतों में पेड लगाकर उसका संवर्धन किया गया और एक व्यक्ति एक पेड की संकल्पना बरकरार रखी तो पर्यावरण का संरक्षण किया जा सकता हैं।

3 याता यात के लिए आवश्यक हैं तो ही स्वंय की गाडी का उपयोग करना, महज आवश्यक नहीं हैं तो सार्वजनिक याता-यात का उपयोग करना चाहिए। इससे पर्यावरण का संरक्षण किया जा सकता हैं।

4 भारत देश संस्कृति प्रिय देश हैं इसलिए हर माह में त्योहारों का आना जाना चालु ही रहता हैं। यह त्योहार अगर जल प्रदूषण मुक्त होने चाहिए। इससे पर्यावरण का संरक्षण होना चाहिए।

5 वर्तमान में शासन स्तर पर भी पर्यावरण संरक्षण के लिए भरसक प्रयास किया गया हैं, इसी के परिणाम स्वरूप स्कूल, महाविद्यालय में पर्यावरण का विषय सभी छात्रों को अनिवार्य कर दिया गया हैं, किंतु पढा ने के लिए किसी पंडित शिक्षकों की भरती नहीं की गई। इससे पर्यावरण का संरक्षण किया जा सकता हैं।

6 लोगों ने पर्यावरण पुरक नियमों का अनुपालन करना चाहिए ।

इस तरह से वर्तमान परिवेश में विज्ञान के कारण हो रहे परिवर्तन के साथ–साथ हमें पर्यावरण का भी खयाल रखना होगा। इस पर भरसक चर्चा , संगोष्ठी आदि के मध्याम से पर्यावरण का महत्व हमेशा बताना होगा, नियम बनाकर पालन करना होगा। रोजमर्रा की जीवन शैली में हो रहे परिवर्तन को याद रख कर पर्यावरण युक्त जीवन जीना पडेगा। मैंने महज अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा जन समुह के संरक्षण की प्राथमिक स्तर पर बात छेड दी हैं, ऐसे कई प्रावधन हैं, जो पर्यावरण का संरक्षण तो करना चाहते हैं, किन्तु परिवर्तन तो हमारे मन की बात हैं जो दिल से करनी चाहिए।

संन्दर्भ :

1 हमारा पर्यावरण हमारा जीवन,राधेश्याम गुसा,इशिका पब्लिकेशन,जयपुर 2010
2 पर्यावरण संरक्षण एंव कानुन, मनोज शर्मा,इशिका पब्लिकेशन,जयपुर-2010
3 पर्यावरण शिक्षण,डॉ मधुकर पुंडगे और वर्षा सावतकर,निर्मल प्रकाशन नांदेड-2010
4 कुरूक्षेत्र मासिक, जनवरी -2008
5 दै. अमर उजाला, 2 ऑक्टोबर 2014
6 योजना, राजेशकुमार झा –आक्टोबर-2014
7 www.swachbharatabhin.com